



“सत्संग”

अज दे इस रुहानी सत्संग विच जो शब्द बक्षीश कीता है, ओ है “सत्संग ।”

- “विसर गई सभ तात पराई जब ते साथ संगत मोहि पाई । ना को बैरी नही बिगाना सगल संग हम कउ बन आई । जो प्रभ कीजो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई । सभ महि ख रहिआ प्रभु एके पैख - पैख नानक विगसाई ।” (5-1290)

- “सतिगुर कोउ बलि जाईऐ । जित मिलिए परमगति पाईऐ ।
खुर नर मुनि जन लोचदे सो सतिगुर दिआ बुझाई जीउ ।
सतसंगत कैसी जाणिए जिथे एको नाम वख्याणीऐ । एको नाम
हुकम है नानक सतिगुर दीआ बुझाई जीउ । हुकम जिना नो
मनाइआ तिन अन्तर सबद वसाइआ । सहिआ से सोहागणी
जिन सह नाल पिआर जीउ । जिना भाणे का रस आइआ तिन
विचहु भरम चुकाइआ ।”
- “सतसंगत मैं हरि हरि वसिआ मिल संगत हरि गुन जान ।
वडै भाग सतसंगत पाई गुर सतिगुर परस्य भगवान ।”

(4-1335)

- “नानक सतिगुर ऐसा जाणिए जो सभसै लए मिलाए जीउ ।”
- “सतसंगत महि नाम हरि उपजै जा सतिगुर मिलै सुभाए ।
मन - तन अरपी - आप गवाई चला सतिगुर भाए । सद
बलिहारी गुरु अपने विरह जि हरि सेती चित लाए ।”
- “जप मन हरि हरि नाम तरावैगा । जो - जो जपै सोई गति
पावै जिउ ध्रुव - प्रहिलाद समावैगा । किरपा - किरपा - किरपा
कर हरि जीउ करि किरणां नाम लगावैगो । करि किरपा सतिगुर
मिलावहु मिल सतिगुर नाम थिआवैगो । जन्म - जन्म की
हउमै मल लाणी मिल संगत मल लह जावैगो । जिउ लोहा
तरिओ संग कासट लग सबद गुरु हरि पावैगो । संगत - संत

मिलहु सतसंगत मिल संगत हरि रस आवैगो । बिन संगत करम
करै अभिमानी काढ पाणी चीकड़ पावैगो ।”

- “आवहु संत मिलहु भाई मिल हरि - हरि नाम बरवान । कित
विथि किउ पाईए प्रभु अपना मोकउ करहु उपदेश हरिदान ।
सतसंगत महि हरि - हरि वसिआ मिल संगत हरि गुन जाना ।
बडै भाग सतसंगत पाई गुरु - सतिगुरु परस्य भगवाना ।
गुन गावहु प्रभ अगम ठाकुर के गुन गाड रहे हैरान । जन
नानक कउ गुर किरपा थारी नाम दिओ खिनदान ।”
- “पूरे गुर तै सतसंगत उपजै सतिगुर बाझहु संगत न होई ।
(3-427)
- बिन शब्दे पार न पाए कोई । (3-1068)
- आठ दस को छीपरो होइओ लाखीणा ।” (487)

(पाठी माँ साहिबा)



(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐ गुरु नानक देव जी दी बाणी है, जिसदे
विच उन्हानि सत्संगत दी महिमा स्पष्ट कीती है । इसदा जो
शब्दिक अर्थ है, दो लफजां नाल मिल के बणे हैं सत और संग
। यानि कि सत दा संग ही सत्संग है । इस सृष्टि विच जो

कुछ वी असी देखदे हाँ, जो वी सारा पसारा, चाहे ओ गुप्त रूप
विच है, झूठ है । सारी सृष्टि ने खत्म हो जाणा है जद सारी
सृष्टि झूठी है इसने विले हो जाणा है, प्रलय विच महाकारण
तक दी रचना ने समाप्त हो जाणा है, फिर इसदा कीता गया
संग किस तरीके नाल सच्चा हो सकदा है । तो ऐ सत्संग दे
भाव बड़े गहरे अर्थ रखदे हन । असी हर किसी चीज नूँ आपणी
बुद्धि समर्थानुसार उसनूँ लभ रहे हाँ, जो पिछले जन्मानुसार
बणी है । कोई मूर्ति नूँ जड़ चेतन वस्तुआं नूँ पूज रेहा है यानि
कि कोई मूर्ति, पौथी नूँ पूज रेहा है । ऐ सारे दे सारे आपणी
बुद्धि अनुसार समर्थानुसार गाये गये गुण सत्संग नहीं कहलादे
। सत्संग की है ? सत कित्थे है ? सत किसनूँ कहंदे हन ?
सत्पुरुष सचखण्ड दा मालिक, केवल ओ ही सच्चा है ओ ही
इस काल सीमा तों परे है, महाप्रलय, प्रलय तों परे है, ओसने
निश्चित और अटल रहणा है । इस सृष्टि दे विच सच कित्थे है
? ओ सच सिर्फ सतिगुर दे विच मौजूद है प्रगट रूप दे विच,
वैसे तां असी सारे कहंदे हाँ परमात्मा जो है जर्र - जर्र दे विच
है । कोई शक नहीं, हर कण दे विच ओ परमात्मा दी ताकत
मौजूद है, की जड़, की चेतन, किसी नूँ वी देख, अगर ऐ समर्था
निकल जावे, ऐ आवाज जो सत्पुरुष दी है निकल जावे, कोई

वी वस्तु चाहे ओ जड़ है चाहे चेतन है ओ स्थिर नहीं रह सकदी। इने (इतने) वड्डे - वड्डे पर्वत हन, हिमालय पर्वत किसदे सहारे खड़ा है? किसने इसनूं आधार दिता होया है? इको ही सच ने, उस परमात्मा ने, उस परमात्मा दी आवाज ने। ओ आवाज परमात्मा दी जिदे (जिसदे) अंदर प्रगट है, सतिगुरु स्पष्ट करदे ने, जिनां ने इस आवाज नूं प्राप्त करके सत्पुरुष नूं प्रगट कर लेया, उन्हाँनूं अस्यी संत दी पदवी देंदे हाँ। उन्हाँ दे बचन सुण करके सत दे संग नूं ऐ संज्ञा सत्संग दी नहीं दे सकदे। क्यों नहीं दे सकदे, उसनूं वी स्पष्ट करदे ने गुरु साहब। जिस तरह इस लोक दे विच क्लास विच बहुत सारे विद्यार्थी पढ़ करके, डिग्री लै करके बाहर निकलदे ने। उन्हाँ दे विच्चों किसी इक नूं सरकार जो है इक appointment देंदी है, जज दी कुर्सी ते बिठांदी है, उस वक्त उस जज दे विच ओ समर्था आ जांदी है, उसदी कलम विच ओ ताकत आ जांदी है कि ओ इक अपराधी नूं चाहे फांसी वी दे सकदा है। पर उसदे नाल दे निकले होये बाकी दे students उसदे बराबर दी qualification उन्हाँ कोल है, उसदे बावजूद उन्हाँ विच इतनी वी समर्था नहीं है कि उसदी मर्जी दे बगैर उसदी अदालत विच शामिल हो सकण। न ही

ओदी कलਮ विच ओ ताकत है, कि किसी अपराधी नूं फास्यी
ते की चढ़ाना है, कि जेल वी भेज सके । उसे तरीके दे नाल,
ऐ सच है परमात्मा दी आवाज, जो सत्पुरुष दा शब्द सरूप है,
आवाज सरूप है, जोत सरूप है, ओ सिर्फ और सिर्फ सतिगुरु
दे अन्दर प्रगट है उन्हानूं ही ऐ अधिकार, ऐ फरमान दिता जांदा
है कि इस जगत दे विच आ करके ओ आपणा कार्यक्रम जो
है करन । ओ कार्यक्रम की है ? ओ केड़ा कम करन आंदे ने
? ओ अधिकारी जीवात्मा जेड़िया तड़फ रहिया हन, आपणे
मूल विच समाण वास्ते उन्हानूं लैण वास्ते, उन्हां दी सफाई
करन वास्ते, उन्हां दा जरिया बणन वास्ते, उन्हानूं लैण लई,
सत्संग पहुँचाण वास्ते ओ आंदे हन तां उन्हां दा जो संग है
सत्पुरुष दा जो कि सतिगुरु दे अन्दर प्रगट है ओ ही जो संग
सत्संग कहलांदा है । उसदे इस सृष्टि दे विच जितने वी गुण
गाये जा रहे ने, उस परमात्मा दे किसी वी रूप विच गाये जा
रहे ने, उन्हानूं असी सत्संग दा दर्जा नहीं दे सकदे । हुण जेड़िया
जीवात्मा सत्संग करदिया ने बाहर वी और अन्दर वी, ओ
अकेली जो जीवात्मा है ओ सत्संगी कहलांदी है और जित्थे ढक
तों ज्यादा जीवात्मा इकट्ठिया हो जादिया हन, उन्हानूं असी
संग दा रूप यानि सत्संगत कहंदे हां । ऐत्थे असी विचार ऐ

करना है कि असी सारे ही आपणे आप नूं सत्संगी कहलाणा
पसन्द करदे हां, गुरु साहबां ने इस शब्द दा इस्तेमाल बहुत
घट कीता है उसदी सिर्फ इको ही वजह है कि असी सही मायने
दे विच सत्संगी है ही नहीं । क्यों ! क्योंकि असी न ते बाहर
दा सत्संग कीता है, न अन्दर दा सत्संग कीता है । कबीर जी
ने आपणी बाणी दे विच बिल्कुल स्पष्ट कीता है कि साकृत दा
संग जो है, ओ सत्संग नहीं कहला सकदा । किस तरीके दे
नाल “बासन कारो परसिये ता कुछ लागे दाग ।” अगर इक
काले भाडे नूं चुक करके सिर्फ इक जगह तों दूसरी जगह रख
देंदे यानि के इक क्षण मात्र दा ओदा संग प्रैक्टिकल रूप दे
विच, ऐत्थे जो भाव समझाण वाला है इस तुक दे विच अगर
असी इक काले भाण्डे दे कोल बैठे हां, युगा - युग बैठे रहिये
जद तकण असी उसदे नाल प्रैक्टिकल तौर ते मिलदे नहीं,
यानि के हथ उसनूं लगादे नहीं हां तद तकण ओ कालिख सानूं
नहीं लगदी । ठीक उसे तरीके दे नाल ऐ रुहानी भाव जो है
सत्संग नाल संबंध रखदा है । असी कह ते देंदे हां कि असी
सतिगुरा दे सत्संग विच जा रहे हां, कोई शक नहीं सत प्रगट
है, असी उस सच दा संग वी कर रहे हां, पर उसदा लाभ अज
तक नहीं प्राप्त कर सके । क्यों नहीं कर सके ! क्योंकि असी

ਪ੍ਰੈਕਿਟਕਲ ਤੌਰ ਤੇ ਕਦੀ ਉਥ ਸਚ ਨੂੰ ਛੁਆ ਨਹੀਂ, ਛੁਆ ਦਾ ਭਾਵ ਹੈ ਕਿ ਅਖੀ ਸ਼ਾਰੀਰਿਕ ਤੌਰ ਤੇ ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਛੂਣਾ'। ਸਤਿਗੁਰੁ ਜੋ ਆਪਣੇ ਸਾਂਗ ਦੇ ਵਿਚ ਉਪਦੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ, ਜੋ ਹੁਕਮ ਕਰਦੇ ਨੇ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਆਪਣੀ ਜਿਨ੍ਦਗੀ ਨੂੰ ਢਾਲ ਲੈਂਦੇ ਹਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਆਪਣੇ ਰੋਜ਼ਮਰਾ ਦੇ ਕਮ ਕਰਦੇ ਹਨ ਔਰ ਆਪਣਾ ਖਾਲ ਸਿਰਫ ਔਰ ਸਿਰਫ ਉਥ ਸਚ ਜੋ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦੇ ਅਨੰਦਰ ਪ੍ਰਗਟ ਹੈ, ਉਥ ਬਲ ਲਗਾ ਕਰਕੇ ਰਖਦੇ ਹਨ, ਤਾਂਹੀ ਜਾ ਕਰਕੇ ਸਾਨੂੰ ਇਥ ਸਤਸਾਂਗ ਦਾ ਲਾਭ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਂਦਾ ਹੈ। ਅਜ ਤਕ ਸਾਨੂੰ ਕਿਧੀਂ ਨਹੀਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਯਾ, ਉਸਦੀ ਸਿਰਫ ਐ ਹੀ ਵਜਹ ਹੈ ਅਖੀ ਮੌਖਿਕ ਰੂਪ ਦੇ ਵਿਚ ਸਾਂਗ ਦੇ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋਂਦੇ ਹਨ ਔਰ ਮੌਖਿਕ ਰੂਪ ਦੇ ਵਿਚ ਜਿਤਨੀ ਰਹਮਤ ਸਤਿਗੁਰੁ ਸਾਨੂੰ ਬਕ਼ਥਾਦੇ ਨੇ, ਉਸਦਾ ਅਖੀ ਅਨਦਾਜ ਵੀ ਨਹੀਂ ਲਗਾ ਸਕਦੇ। ਇਖੀ ਭਾਵ ਨੂੰ ਲੈ ਕਰਕੇ ਗੁਰੁ ਸਾਹਬ ਸ਼ਪਣ ਕਰਦੇ ਹਨ, ਸਤਸਾਂਗ ਦੀ ਹਿੱਸੇ ਹਨ, ਇਕ ਬਾਹਰ ਦਾ ਸਤਸਾਂਗ ਹੈ, ਇਕ ਅਨੰਦਰ ਦਾ ਸਤਸਾਂਗ ਹੈ। ਹੁਣ ਅਨੰਦਰ ਦਾ ਸਤਸਾਂਗ ਜੋ ਹੈ ਸਿਰਫ ਓ ਹੀ ਸਚਾ ਸਤਸਾਂਗ ਹੈ, ਕਿਧੀਂ! ਕਿਥੋਂਕਿ ਉਸੇ ਨੇ ਸਾਨੂੰ ਪਾਰ ਲੈ ਕਰਕੇ ਜਾਣਾ ਹੈ। ਬਾਹਰ ਦਾ ਸਾਂਗ ਪੂਰੀ ਸਤਿਗੁਰੁ ਦਾ ਸਾਂਗ, ਸਚ ਅਨੰਦਰ ਪ੍ਰਗਟ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸਾਂਗ ਅਖੀ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ, ਸਤ ਛੋਣ ਦੇ ਬਾਦ ਵੀ ਓ ਛੂਠਾ ਹੈ, ਅਥੂਹਾ ਹੈ। ਕਿਧੀਂ? ਕਿਥੋਂਕਿ ਓ ਸਾਨੂੰ ਸਚਖਣਡ ਨਹੀਂ ਲੈ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਓ ਸਾਨੂੰ ਰਖਾ ਦੇ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਓ ਸਾਡੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਕਰਮਾਂ ਤੇ ਪਰਦਾ

पा सकदा है बहुत सारे करम कट सकदा है, होर कई तरीके
दे फायदे दे सकदा है पर मुकम्मल तौर ते जद तकण जीवात्मा
बाहर दा संग प्रैक्टिकल तौर ते पूरा करके अन्दर दी चढ़ाई
नहीं करदी, अन्दर दे सच नूं प्राप्त नहीं करदी, यानि के जो
सतिगुरु बाहर देह लै करके बैठे ने, साथ - संगत जी ऐ देह
सतिगुरा ने वी ऐत्ये छड जाणी है, शिष्य ने वी छड जाणी है
देह झूठी है । झूठे दा संग करके कदे असी उस सच नूं प्राप्त
नहीं कर सकदे । सो भाव ऐ है कि जो उन्हां दे उपदेश हन,
उन्हांनूं आपणे अन्तर दे विच धारण नहीं करदे और उन्हां दे
अनुसार जिन्दगी नूं नहीं ढालदे, असी अन्दर दी पौढ़ी ते पैर
नहीं रख सकदे । असी की करदे हाँ, बाहर दा संग पूरा कीता
नहीं, अख बंद करके जपण लगे हाँ । साड़ी जुबान वी झूठी है,
अगर झूठी जुबान दे नाल उस सच्चे नूं याद करागे ते क्या ओ
सच्चा प्रगट हो सकदा है ! तुसी विचार करके देखो, साड़ी
जुबान कितनी झूठी है, कितनी मैली है, कितनी गन्दी है, ईरखा,
द्वेषता, निन्दा और कैसे - 2 अवगुण असी इस जुबान दे नाल
दिने - राती व्यान करन लगे हाँ, क्या घंटा, दो घटे इस जुबान
दे नाल उस सच्चे शब्द नूं याद करके असी उसदे विच्चों कुछ
हासिल कर लवागे ! सिर्फ ऐ ही इक कमी है, ऐ ही इक भाव

है रुहानियत दा, जिसनूं असी अज तक नहीं समझ सके और
ऐनूं न समझण दी वजह दे नाल ही असी अंतर दी पौढ़ी ते अज
तक पैर नहीं रखया और न रखण करके ही असी उस सच्चे
संग नूं प्राप्त नहीं कीता । क्यों ! मन दीआं चाला ने, मन दीआं
दलीला ने सत्संग चले जाओ, अमृत छक लो, नाम लै लो,
सतिगुरा दे कोल बैठ जाओ, कपड़े खिंच लो कम खत्म,
मजमून खत्म बंदखलासी, मुक्ति मिल जायेगी । इतनी आसान
अगर मुक्ति होंदी ते सतिगुरा नूं इतने उपराले करन दी की लोड़
सी ? कुर्बानिया देण दी की लोड़ सी ? छोटे - छोटे बच्चे जेड़े
जिंदे नीआं विच चुणा दिते, इन्हां दी की लोड़ सी ? ऐ सिर्फ
इस करके कि उस सच नूं प्रगट करन वास्ते उन्हाने आपणी
हस्ती तक मिटा दिती और असी हाँ कि आपणी हस्ती मन दे
ऊपर वारन लगे होये हाँ । सदिया ही हो गईया मन दीआं
फरियादा पूरी कर रहे हाँ और अज तक कदे असी सतिगुरू दे
उपदेश ऊपर अमल नहीं कीता, कदी उसदे ऊपर प्रैक्टिकल
जामा नहीं पहनाया और ताही करके असी बाहर दे बाहर बैठे
हाँ । पर मन ने ऐ समझाया कि गुरुद्वारे - मन्दिर जाओ,
सत्संग घरा विच हो आओ, कथा - कीर्तन सुण लो, सत्संग
सुण लो तुहाडी बंदखलासी हो जायेगी । तो साध - संगत जी

इतना सस्ता और आसान मजमून नहीं है, बड़े गहरे भाव हन सत्संग दे । सतिगुरु प्रगट होंदे ने सोलह सूरज प्लस जो सत्पुरुष दी समर्था है ओ उन्हाँ दे अन्दर कम करदी है । इन्हाँनूं असी किस तरीके नाल विचार सकदे हाँ, इक सूरज, सिर्फ इक सूरज इस सृष्टि दे विच इन्हाँ अखाँ दे नाल असी जित्ये तक देख सकदे हाँ, कोई ऐसा कोना नहीं जित्ये सूरज दी किरन व्याप्त न होवे, जेड़ी कि उसनूं आधार न दे रही होवे, आपणी जिन्दगी न दे रही होवे । जद इक सूरज इतनी वड्डी सृष्टि दी पालना कर रेहा है तो ऐ शरीर जो कि असी इन्हाँ अखाँ दे नाल देखदे हाँ, सतिगुरु रूप दे विच, ओ सिर्फ शरीर नहीं है, ओदे अन्दर ओ सोलह सूरज और सत्पुरुष दी समर्था कम कर रही है । ओ जेड़ियाँ भाग्यशाली जीवात्मा अंतर दे विच जादियाँ ने, उन्हाँने महसूस कीता है, देखया है, कि ओ चढ़या होया सूरज किसनूं कहंदे ने ! सतिगुरु किस चीज दा ना नाम है ! किस हस्ती दा ना है ! कि ओ किरण किस तरीके दे नाल जड़ और चेतन अनगिनत ब्रह्ममंडाँ नूं आधार दिता होया है सिर्फ ओ ही जीवात्मा महसूस कर सकदी है । सो रुहानियत दा जो मजमून है ऐ आत्मा दा मजमून है, जद तकण ऐ आत्मा आपणे ख्याल नूं बाहरों दी निकाल करके अंतर दे विच इकट्ठा नहीं करदी,

उस शब्द रूप नूं जो कि सतिगुरु देह लै करके बैठे ने, पिछों
शब्द रूप ने, ओदे विच लीन नहीं हो जांदी, तद तकण ओ
उन्हां दी समर्था नूं जाण ही नहीं सकदी । इसी करके असी
बाहरी तौर ते कह देंदे हां, परमात्मा हर जगह मौजूद है,
सतिगुरु परमात्मा है पर सिर्फ ऐ जुबानी तौर ते है, कदी
प्रैक्टिकल तौर ते असी इसदे ऊपर यकीन नहीं कीता । असी
लड़न नूं तैयार हो जावागे असी आपणे सतिगुरु ते वारे जादे
हां, सानूं आपणे सतिगुरु ते यकीन है । साध - संगत जी
सतिगुरु सवाल करदे ने, अगर तुहानूं इतना ही यकीन है ते
अज तक तुसी उन्हानूं अंतर दे विच प्राप्त क्यों नहीं कर लेआ
? क्या ओ तुहाडे तों बाहर बैठे ने ? क्या ओ तुहाडे तों दूर ने
? क्या तुहाडा जो मनुखा जन्म है, ऐ किसदी रहमत नाल
मिलया है ? क्या हवा विच सानूं प्राप्त हो गया है ! ऐ उसदी
रहमत है, उसदी दया है । इतनी बक्षीश करन दे बाद वी असी
उसनूं भुल्ली बैठे हां, सिर्फ इस जगत दे नाल सानूं प्यार है,
इस जगत दीआं रीतां दे नाल सानूं प्यार है । घंटा दो घटे असी
गुरुद्वारे, मन्दिर, सत्संग - घरां दे विच जादे हां, जो वी सानूं
उस वेले महसूस होंदा है, ओत्थे तक ही साडा कुज प्रभाव रहंदा
है, ज्यों ही असी उन्हां तों बाहर निकलदे हां, काल दी लीला

प्रबल हो जांदी है। जुबान आपणा कम करदी है, अखां आपणा कम करदियां ने, कन आपणा कम करन लग जादे ने यानि के असी उस सच तों, उस परमात्मा दी आवाज तों इतने दूर हो जादे हां, कि ओ अंतर दे विच दिन - रात धुनकारे दे रही है सिर्फ इतना ही फर्क है पलक झपकदे ही असी उस आवाज नूं देख सकदे हां, सुण सकदे हां, पर अज तक सदियां ही हो गईयां, पता नहीं कितनी वारी ४५ कठी, कितनी वारी इस मनुखे जन्म विच आये, पर कदे वी इस तुक नूं सार्थक नहीं कीता, अज तक असी भ्रम दे विच फंसे बैठे हां। जद तकण असी प्रैक्टिकल रूप विच इस मजमून नूं नहीं समझागे इसदे रुहानी भाव नूं नहीं जाण सकदे। बाहर जो देह मौजूद होंदी है सतिगुरा दी, उन्हां दे हर अंग दे विच्चों इस तरीके दे नाल ओ सूक्ष्म किरनां दी शीतलता निकलदी है जेडी कि इस सृष्टि दे विच जड़ या चेतन जितनियां वी जीवात्मा ने सब नूं ओ शीतलता प्रदान करदी है। किस तरीके दे नाल ! संतां दी बाणी है कि अगर संत न होंण ते ऐ जगत जो है “जल मरे” जल मरे दा की भाव है ! कि असी सारीया जीवात्मा अलग - २ जूनिया दे विच आशा, तृष्णा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और दुनिया भर दे विशे - विकारा दे विच दिन - रात ऐसी भयानक

अग विशे - विकारा दी जल रही है, असी झुलस रहे हां, हर पल
झुलस रहे हां और इस झुलसण तों सिर्फ और सिर्फ पूर्ण
सतिगुरु जदों इस जगत दे विच अवतार लै करके आंदे ने,
जो उन्हां दे अंग विच्चों सचखण्ड दीआं सूक्ष्म किरनां
निकलदिया ने, ओ ऐस सारे जगत नूं आथार वी देंदीया ने और
शीतलता वी प्रदान करदिया ने । जिस तरह इक सूरज अगर
इक दिन वी न निकले, ते सृष्टि खत्म हो जायेगी, उसे तरीके
दे नाल याद रखणा जिस दिन सत इस सृष्टि तों निकल
जायेगा यानि के सतिगुरु इस सृष्टि दे विच नहीं होंणगे ते
प्रलय आ जायेगी, ते ऐ प्रलय, महाप्रलय दा रूप लै करके
सचखण्ड दे पिछे दी सारी रचना जेडी है खत्म हो जायेगी ।
सो कदे वी संत जो ने इस सृष्टि तों अलग नहीं ने, सत्पुरुष
दी आपणी ताकत है, आपणी समर्था है । सतिगुरु कई बारी
उपदेश करदे ने, कि असी ओदी रहमत नूं कदी समझ ही नहीं
सके, जाण ही नहीं सके, सो ऐ सोलह आने सच है कि अज
तक सानूं ऐ सूक्ष्म किरनां नजर नहीं आईया । असी अखां बंद
करके सतिगुरु दे कोल जादे हां, जदों ओ दर्शन देण वास्ते
सामणे आंदे ने, ते असी उस वेले अखां बंद करके नींद दे विच
व्याप्त हो जादे हां, ते किस तरीके दे नाल असी उस सच नूं

जाण सकदे हां ! उसनूं जाणन दा सिर्फ और सिर्फ इको ही
उपाय है, इको ही तरीका है, जो पूर्ण सतिगुरु आपणे सत्संग
विच हुकम करदे ने, ओ ही तरीके नूं अपना करके और ओ
तरीका अलग - अलग युगां दे विच अलग - 2 तरीके लै करके
आंदा है । क्यों ! क्योंकि जित्थे उम्र लम्बी होंदी है ओत्थे ही
काल दा प्रभाव वी ओदे हिसाब नाल ही होंदा है । पुराणां काल
दा हिसाब घट सी, अज काल दा हिसाब बहुत ज्यादा है, अज
उम्रां बहुत छोटियां ने, उसे अनुसार सतिगुरु ने तौड़ इतने सिधे
और आसान दे देंदे ने, कि सानूं किसी योग दे विच भ्रमण
करन दी लोड़ नहीं, किसी तप दे विच जाण दी लोड़ नहीं,
किसी कर्मकाण्ड करन दी लोड़ नहीं । बड़े ही सस्ते और
आसान उपाय सतिगुरु देंदे ने, कि ऐ जगत झूठा है जगत झूठे
नूं भुल्लो, ऐ शरीर झूठा है, ऐ शरीर नूं भुल्लो, आपणी लिव,
आपणी आत्मा समेटो, सिर्फ सत दी तरफ मोड़ो, सत दे नाल
जुड़ो । तां ही जा करके असी उस परमात्मा नूं प्राप्त कर सकदे
हां, प्राप्त करके असी इस आवागमन तों मुक्ति प्राप्त कर
पावांगे । सो ऐ भाव जो है संत हर युग दे विच समयानुसार
देंदे ने और असी की है, सतिगुरु चौला छड़ जादे ने, जेडे उन्हां
दे नजदीकी होंदे ने, बाकी संगत ते वैसे ही डरदी रहंदी है, तां

ओ आपणी मत दे अनुसार जो वी हुकम उपदेश करदे ने, ना
(नाम) सतिगुरां दा दे देंदे ने, पर उन्हां दी आपणी मत कम
कर रही होंदी है और जगत दे विच ऐसे - 2 कर्मकाण्ड चल
पैदे ने कि असी उन्हां संतां दी बाणी दे जो रुहानी भाव ने,
उन्हानूं किसी न किसी मत या धर्म दी बड़ी - बड़ी और उच्ची
दीवार बणा करके उन्हां दीआं नीआं दे विच उन्हानूं दफन कर
देंदे हां। विचार करके देखो, जेडे संतां ने जो समाधियां बणादे
ने और दूसरे तरीके दीआं निर्जीव वस्तुआं दीआं पूजा करदे ने,
उन्हां दे खिलाफ उन्हानूं सच दा होका दे करके जाग्रित कीता,
ते अज असी नजर मार करके देखिये कि उन्हां दीआं वी कब्रां
बणियां होईयां ने, उन्हां दीआं कब्रां नूं उन्हां दे शार्गिद और
उन्हां दे चलाये गयं मत - धर्म उन्हानूं पूजण लगे ने कहागे,
असी नहीं बणाई, ओ कहेगा, मैं नहीं बणाई ओने बणाई है,
किसी और ने बणाई है। साथ - संगत जी किसी ने आसमान
तों आ करके नहीं बणाई, सारीयां चाला इस मन दीआं ने और
मन कित्थे दूर थोड़ी गया है ! ऐ इतिहास आपणे आप नूं
दोहरांदा है, बार - 2 दोहरांदा है। जो गला बीत गईया ओ
फिर प्रगट हो रहिया ने, इक, दो, तिन करके साडे सामणे आ
रहिया ने और असी मनमुख हो करके मन दे हुकम विच आ

करके, ओ सच नूं भुल जादे हाँ, ऐत्थे तक असी वाणी नूं वी
बदलन दी कोशिश करदे हाँ । ऐत्थे गुरु साहिबान स्पष्ट करदे
ने, सत्संग जो है ऐ सत दा आधार है, सचखण्ड तों उपदेश,
जो शब्द मिलदे ने ओ ही सारी प्रकृति वास्ते लागू होंदे ने, होर
जगत दे विच असी देखदे हाँ परमात्मा दे गुण आपणी - 2
बुद्धि और समर्थानुसार गाये जा रहे ने । ओ की है ? ओत्थे
असी प्रवचन शब्द दा इस्तेमाल करदे हाँ, प्रवचन और सत्संग
शब्द दा आपस विच विरोध है, जिस तरह नाम और हौमे इक
जगह नहीं रह सकदे, अंधकार और सूरज यानि के प्रकाश इक
जगह नहीं रह सकदे, उसी तरीके दे नाल प्रवचन और सत्संग
शब्द जो ने इक जगह नहीं रह सकदे । दोनां दा की भाव है !
यानि के जो प्रवचन है, प्रवचन दा आधार की है ? प्रवचन दा
आधार है विद्वता यानि के विद्वान होंणा, अच्छे गिआनी होंणा,
बहुत सारे वेद - ग्रथा, बहुत सारे ग्रथा दा बहुत सारे श्लोकां नूं
रट लैणा, उन्हां दे अर्थ हासिल कर लैणे और बहुत सारे जगत
नूं इकट्ठा कर लैणा, सामणे प्रगट करना बड़े सुन्दर लफजां दे
रूप दे विच, तां इसनूं असी प्रवचन कहंदे हाँ और इसदा आधार
है विद्वता । विद्वता दा आधार की है ! हौमे। हौमे की है ?
अहंकार, ऐ मन दा इक विकार है, मन दे अधीन कीते गये

जितने वी करम ने, ऐ सारे दे सारे 84 लख जून विच भ्रमण
करादे ने यानि के प्रवचना दा आधार 84 लख दा भ्रमण है ।
दूसरे पासे सत्संग है, सत दा संग । सत की है, सत्पुरुष । और
जो सत्संग सतिगुरु फरमादे हन, ओ सिर्फ और सिर्फ जो शब्द
उन्हानूं सचखण्ड तों बक्शीश कीते जादे ने, ओ ही उन्हां दे
मुखारबिंद तों उत्पन्न होंदे ने । बाकी कोई वी मत भ्रम विच रवे
(रहे) कि इक लफज वी उन्हां दी मतानुसार या किसी होर दी
मतानुसार उन्हां दे मुख विच्यों उच्चारित कीता जा सकदा है
। यानि के ओ ऐसे लफज होंदे ने, उन्हां दे विच सत्पुरुष दी
सचखण्ड दी ताकत व्याप्त है । जेडे मन नीवां करके सत्संग
विच आंदे ने, मन नूं साफ करके आपणी तख्ती नूं धो करके,
बिल्कुल गुरु नूं मुख रख करके सत दे विच बैठदे ने, ताहीं
उसदा सही मायने विच संग करके लाभ प्राप्त कर सकदे ने ।
अगर असी मन नूं मुख रख करके सत्संग विच जावागे, बैठागे,
बेशक पूर्ण सतिगुरु मौजूद ने, प्रगट है पर याद रखणा असी
उन्हां कोलों ओ लाभ प्राप्त नहीं कर सकदे, जिन्हानूं असी अज
तक प्राप्त नहीं कर सके पर कोशिश कर रहे हां । कोशिश
साडी ताहीं कामयाब होयेगी अगर असी आपणे सत नूं मुख
रखिये, गुरु नूं मुख रखिये, असी हमेशा मन नूं मुख रखदे हां

। कोई शब्दां नूं गिणन वास्ते बैठदा है, कोई इन्हां बाणियां दे विच लफजां दे गेड़ नूं रुक के देखदा है पता नहीं इस लफज नूं राग दे विच नहीं अलापेया गया है, किस तरीके दे नाल उच्चारित कीता गया है, इसदे लफज ते किसी सत्संग विच ऐ अर्थ दिते गये सी, इन्हाने ते ऐ अर्थ दिते ने । साध - संगत जी ऐ सारे मन दे भ्रम ने, ऐ सारीयां मन ढीआं चालां ने, सिर्फ ऐ ही चाहंदा है ऐ मन, कि ऐ जीवात्मा सत दा संग न कर सके, सत दे नाल न जुड़ सके । यानि के जो सत्संग है इस संग दे विच सिर्फ सचखण्ड तों भाव दिते जादे ने और जेड़े प्रैक्टिकल तौर ते इन्हानूं अपना लैंदे ने, ओ जीवात्मा अन्दर दे विच ओ सच ढी आवाज नूं प्राप्त कर लैंदी है और ओ आवाज उसनूं पौढ़ी - दर - पौढ़ी चढ़ांदी होई उस मुकाम ते लै जांदी है जिसनूं असी सचखण्ड निश्चल और अविनाशी कहंदे हां, यानि के उस सत्पुरुष नूं प्राप्त करके ओ जीवात्मा सदा लई अमर हो जांदी है, आवागमन तों मुक्त हो जांदी है । ते हुण विचार करके देखो, सत्संग दा की अर्थ और प्रवचन दा की अर्थ है ! यानि के इक पासे काल है, इक पासे सत्पुरुष है, असी मन ढी चाल विच आ जादे हां कुछ निजी स्वार्थ लई या मान - सम्मान लई । असी वाणी नूं बदलण तक ढी कोशिश कर लैंदे

हां, पर ऐ हमेशा याद रखणा चाहिदा है कि जो इस उपक्रम नूं
चला रेहा है उसदे पिछे किसदा हुक्म चल रेहा है ! सचखण्ड
दा हुक्म इस वक्त इस जगह चल रेहा है, ते सानूं उस हुक्म
दी कद्र करनी चाहिदी है, उसदे ऊपर यकीन करना चाहिदा,
पर ताहंी है जे असी इसदे ऊपर यकीन करके अमली जामा
पहनाईए । कित्ये की अर्थ दिते गये इस भ्रम विच फँसण दा
कोई फायदा नहीं । जिस वेले सरकार आंदी है ओ आपणे
नियम समयानुसार लै करके आंदी है, अंदर दा तत्त इको ही
रहंदा है, अन्दर दी विधि इको ही है । ओ परमात्मा शब्द रूप
है नाम रूप है और ओ की है ! ओदे विच इक रोशनी है, बड़ी
धीमी और बहुत ही मधुर आवाज है, ओ इको ही है पर बाहर
दा जो आडम्बर है ओ समयानुसार जो सतिगुरु प्रगट होंदे ने,
जो जीवात्मा वास्ते लाभकारी है ओ ही उसनूं दिता जांदा है ।
सतिगुरां अगे बहुत सारे सवाल कीते जादे ने, ते सतिगुरु ऐ ही
उपदेश करदे ने, कि सारे मरीजां नूं इको ही दवाई नहीं दिती
जा सकदी, जैसा - 2 मर्ज होंदा है वैसी - 2 दवाई इक पूर्ण
और जाणकार जो वैद्य होंदा है ओदे मर्ज अनुसार ही उसनूं
दवाई देंदा है । तो सतिगुरु जेडे ने, ऐ पूर्ण वैद्य ने, जो समय
चल रेहा होंदा है उस समयानुसार ही ओ दवाई जो है उन्हां

जीवात्मा नूं दिती जांदी है जिन्हां जीवात्मा नूं लैण वास्ते ओ
इस जगत दे विच अवतार लैंदे ने, पर सिर्फ अवतार ही नहीं
लैंदे आपणे आप नूं मिटा करके इक मिसाल कायम कर देंदे
ने कि अगर तुसी उस सच नूं प्राप्त करना चाहंदे हो, ते इक
मिसाल बणो, तुसी मिसाल बणों कि आपणी हस्ती सत दे ऊपर,
आपणे गुरु दे ऊपर बार देओ, ताहीं जा करके असी इस
जीवात्मा नूं उस मुकाम ते लै जा सकदे हां, उस पुं नूं खट
सकदे हां, जिस पुं नूं देण वास्ते, दात नूं देण वास्ते सतिगुरु
इस जगत दे विच अवतार लैंदे हन । तो ऐ जो है सत्संग दे
रुहानी भाव ऐ व्यापक और गहरा अर्थ रखदे ने और जद तकण
इन्हां दी गहराई विच असी छुबकी नहीं लगावागे तद तकण
असी न ते इन्हां भावां नूं समझ पावागे, न ही अमल करागे
और न ही असी उस मोती नूं प्राप्त कर पावागे, जिसनूं प्राप्त
करन लई सतिगुरा ने ऐ दात, ऐ चोला, ऐ मनुखा जन्म सानूं
बक्षया है । याद रखणा, ऐ चोला बार - 2 नहीं मिलना, ऐ
बड़ा कीमती चोला है, ऐ ऐसी कीमत है कि देवी - देवते और
पूरे ब्रह्मण्ड दी कीमत वी अगर चुका दिती जावे, ते ऐ चोला
प्राप्त नहीं हो सकदा । पर सानूं इसदी खबर नहीं है, असी मन
दीआं दलीलां दे विच आपणी हस्ती मिटाण लगे होये हां । बाणी

ਦੇ ਵਿਚ ਵੀ ਏ ਸਾਰੇ ਜਿਤਨੇ ਵੀ ਸ਼ਬਦ ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਤੇ ਹਨ, ਓ ਹੀ ਭਾਵ
ਜੋ ਹੈ ਬਾਣੀ ਲੈ ਕਰਕੇ ਆਂਦੀ ਹੈ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਭਾਵਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਗਹਰਾਈ
ਹੋਂਦੀ ਹੈ, ਅਸੀਂ ਬਾਹਰੀ ਅਰਥ ਕਡ ਕਰਕੇ ਸਤਾਂ ਦੀ ਬਾਣੀ ਜੂਂ ਮਤ ਯਾ
ਧਰਮ ਵਿਚ ਕੈਦ ਕਰਕੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਦੂਰ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ, ਔਰ ਨਾਲ ਹੀ ਏ
ਬੇਡਿਆਂ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਪੈਰ ਦੇ ਵਿਚ ਵੀ ਪਾ ਲੈਂਦੇ ਹਨ, ਆਪਣੇ ਹਥਾਂ -
ਪੈਰਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਤਾਲੇ ਲਗਾ ਲੈਂਦੇ ਹਨ, ਕਿਝੋਂ ! ਕਿਥੋਂਕਿ ਅਸੀਂ ਤੇ ਇਸ
ਮਤ ਜੂਂ ਮਨਦੇ ਹਨ, ਇਸ ਧਰਮ ਜੂਂ ਮਨਦੇ ਹਨ, ਓਦੇ ਵਿਚਿਆਂ ਨਿਕਲਨਾ
ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੀ ਨਹੀਂ । ਸਾਥ - ਸਾਂਗਤ ਜੀ ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਕੈਦ
ਵਿਚਿਆਂ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲਨਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਚਾਹੁੰਦੇ, ਤੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਉਪਦੇਸ਼
ਕਰਦੇ ਨੇ, ਕਿ ਜੇਲਰ ਕੀ ਕਰੇ ? ਜੇਲਰ ਨੇ ਤੇ ਦਰਵਾਜ਼ੇ ਦਾ ਤਾਲਾ
ਲਗਾਯਾ ਸੀ, ਓ ਚਾਬੀ ਲਗਾ ਕਰਕੇ ਖੋਲ ਦਿਤਾ, ਹੁਣ ਅੰਦਰ ਜੋ
ਕੈਦੀ ਨੇ ਓ ਅੰਦਰ ਰੰਗ - ਤਮਾਸੀ ਵਿਚ ਐਥੇ ਮਸ਼ਤ ਹੋਏ ਹੋਏ ਨੇ,
ਉਨ੍ਹਾਂ ਜੂਂ ਪਤਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਕਿ ਦਰਵਾਜਾ ਖੁਲਾ ਹੈ ਅਸੀਂ ਫੌਡ ਜਾਈਏ
ਆਜਾਂਦੀ ਦਾ ਰਸਤਾ ਖੁਲਾ ਹੈ । ਤੌ ਸਤਿਗੁਰ ਆਂਦੇ
ਨੇ, ਏ ਆਜਾਂਦੀ ਦੇਣ ਵਾਸਤੇ ਹੀ ਆਂਦੇ ਨੇ ਔਰ ਦਰਵਾਜਾ ਖੋਲ ਦੇਂਦੇ ਨੇ
। ਯਕਿਨ ਕਰਕੇ ਜਾਣ ਲੋ, ਏ ਦਰਵਾਜਾ ਖੋਲਦੇ ਨੇ ਪਰ ਅਸੀਂ ਐਸੇ
ਮਤ ਬ੍ਰਮ ਵਿਚ ਬੈਠੇ ਹੋਂਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਅਸੀਂ ਕਹਿੰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਅੰਦਰ ਦਾ
ਦਰਵਾਜਾ ਨਹੀਂ ਖੁਲਿਆ । ਸਾਥ - ਸਾਂਗਤ ਜੀ ਬਾਹਰ ਦਾ ਦਰਵਾਜਾ ਤੇ
ਅਸੀਂ ਅਜ ਤਕ ਖੋਲ ਨਹੀਂ ਸਕੇ, ਬਾਹਰ ਦੇ ਕੁਣਡੇ ਤੇ ਅਸੀਂ ਇਸ

जगत दी तरफों मारे होये ने आशा-तृष्णा और कई तरीके दीआं
कामना लै करके, धीया - पुत्र, जमीन - जायदाद, माँ - पिओ,
भैंण - भरा नूं पूजण लगे होये हां, ऐ ताले नहीं लगे होये ? ऐ
ताले असी खोले नहीं और सतिगुरा कोल असी कहंदे हां, अन्दर
दा ताला नहीं खोलया । उन्हां दे प्रगट होंण दे नाल ही ऐ ताले
सारे खुल जादे ने, कि कैदी की ने ओ रंग तमाशा - रंग तमाशा,
रंग तमाशा की है ? ओ जगत तमाशा । बाणी पढ़ करके देख
लो, सारे संतां ने इस सच्चाई नूं प्रगट कीता है कि ऐ जगत
विच जो वी तुसी इन्हां अखां नाल देख रहे हो गुप्त या प्रगट
रूप विच सब झूठ है, ऐ सभ तमाशा है । काल दा कोई दोष
नहीं हैगा, काल सिर्फ आपणी छूयुटी दे रेहा हैगा । काल दी
की छूयुटी है, कि ओदी जीवात्मा नूं भ्रमां करके रखणा और
उसने आपणा करिन्दा मन जो है हर जीवात्मा नाल बिठा दिता
है, उसदा कम ही ऐ है जीवात्मा नूं भ्रमाणा और भ्रमा रेहा है ।
तो सतिगुरु आंदे ने जीवात्मा नूं चेताण वास्ते, होशियार करन
वास्ते ओ आंदे ने, ओ आपणा कम करदे ने, असी उन्हां दी
तरफ ध्यान नहीं देंदे, पर ओ तमाशी दी तरफ जो भ्रमाण वाला
है ओदी तरफ असी ध्यान देंदे हां । पिता कहंदा है, बेटा बस
ने निकल जाणा है, चल जल्दी चलिये रात हो रही है, पर पुत्र

ऐसा है कि ओ तमाशे दे विच मस्त है, कहंदा है, पिता जी थोड़ी देर ठहर जाओ, थोड़ी देर ठहर जाओ, ओदा नतोजा की होंदा है ! कि जन्म ही निकल जांदा है यानि कि ओ बस जेड़ी लैंग आई सी, ओने घर पहुँचाणा सीगा, ओ बस ही निकल जांदी है । अगे फिर अंधेरा ही अंधेरा है, ओ बस - स्टाप ते बैठे ने कोई उन्हाँ दी पुछ करन वाला नहीं, डाकू - लुटेरे आ जादे ने, लुट करके लै जादे ने, ऐ ही लीला इस जगत विच रखी होई है । सतिगुरु आंदे ने, बस लै करके आंदे ने, सच दा होका देंदे ने, हक दा नारा लगादे ने । असी की हाँ, तमाशे दे विच भ्रमे होये हाँ, असी चाहंदे ही नहीं कि असी आपणे घर जाईये, सानूं सोझी ही नहीं । गुरु साहब बार - 2 इस बाणी दे राही चेतादे ने भाई उठो, ऐ जगत दी तरफों सोवों (सो जाओ) ते परमात्मा दी तरफों जागो और असी की हाँ परमात्मा दी तरफों सुते हाँ, जगत दी तरफों जागे हाँ । सदियाँ ही हो गईयाँ हन, परमात्मा कोई दूर बैठा है ! अन्दर बैठा है, पलक झपकदे ही हाजिर है पर असी ओदी तरफों पिठ कीती है, असी सुहागण कित्थों ही जावागे जद तकण असी आपणे पति नाल प्रेम नहीं करागे, इक मेख नहीं हो जावागे असी सोहागण हो ही नहीं सकदे । तो ऐ ही वजह अज तक असी मनुखा जन्म लैंग दे बावजूद

वी अधूरे बैठे हाँ । बाणी वी ऐ ही उपदेश करदी है “विसर गई सभ तात पराई जब तै साध - संगत मोहि पाई ।” हुण ऐ तात की है ? ईर्ष्या है । असी इस जगत दे नाल मन करके जुड़े होये हाँ और जद तकण असी इस मन दी ईरखा दे अर्थीन हाँ, ईर्ष्या मन दा इक विकार है, इन विकाराँ दे अर्थीन कीते गये सारे करम जो ने आवागमन दे विच लै करके आंदे ने, और तद तकण असी इन्हाँ दे विच्छों नहीं निकलदे, असी उस सच नूं प्राप्त नहीं कर सकदे । “विसर गई सभ तात पराई जब तै साध - संगत मोहि पाई ।” साध कौंण है ? साध है सतिगुरु, ओ आंदे किस वास्ते ने ? इन्हाँ तङ्गफदिया जीवात्मा नूं इस जगत दे विच तपश महसूस कर रहिया ने, जिन्हाँनूं इस जगत दे विच बड़ा आनन्द आ रेहा है, जेडे आनन्द लै करके असी इस सत्संग विच बैठे हाँ, ऐत्थों उठ के फिर असी उन्हाँ आनन्दा दे विच मस्त हो जाणा है, ते साध - संगत जी उन्हाँ वास्ते सतिगुरु नहीं आंदे । सतिगुरु उन्हाँ वास्ते ही आंदे ने जेडे आपणी हस्ती मिटा करके, सारे सुख साधन उन्हाँ दे घरा विच मौजूद ने, पर उसदे बावजूद ओ तङ्गफ रहे ने, तपश महसूस कर रहे ने । यानि कि ऐ ईरखा कदों खत्म होयेगी, ओदों ही होयेगी जदों मैं सतिगुरु दी शरण विच आवांगा, जदों तक ऐ

जीवात्मा ओढ़ी शरण नहीं लैंदी सतिगुरु दी तन, मन, धन,
वचन और कर्म दे नाल तद तकण ओ विसर नहीं सकदी इस
जगत दी तरफों । ऐ भाव जो है ऐदे विच (बाणी विच) स्पष्ट
कीता है सतिगुरां ने ना कोई बैरी ते न कोई बेगाना, असी
किसनूं कहंदे हाँ बेगाना ? किसनूं कहंदे हाँ कि कोई साडा बैरी
है ? सरियां दे अन्दर ओ इक परमात्मा वसया होया है पर असी
उसनूं जाण नहीं सके, मुँह जुबानी तौर ते कह ते देंदे हाँ कि
सारी जगह ओ परमात्मा वसया होया है पर विचार करके देखो,
क्या सानूं उसदा यकीन है ? अगर सानूं उसदा यकीन होवे कि
सब जगह ओ परमात्मा है, ते फिर असी गला किसदा कटदे
हाँ ! जेब किसदे हल्के करदे हाँ ! ईरखा किसदे नाल करदे हाँ
! निन्दया किसदी करन लगे होये हाँ ! ऐ सब इसी करके कर
रहे हाँ कि सानूं अज तक ऐ यकीन नहीं है कि सबदे अन्दर,
क्या जड़ क्या चेतन, क्या नियली जूनां, ते क्या उतली जूनां,
ऐ सब भोगी जूनां ने, सब दे अन्दर ओ इक परमात्मा दी
आवाज और प्रकाश कम कर रेहा है । ऐदा सानूं यकीन नहीं,
अगर यकीन होवे, ते असी आप ही जगत दी तरफों
अखां बंद कर लवागे, सारी तात विसर जायेगी और उस
परमात्मा नूं असी प्राप्त कर लवागे । ओदे बाद सतिगुरु उपदेश

करदे ने, ऐ जीवात्मा जेड़ी अंतर दे विच उस सच नूं यानि के प्रकाश और आवाज नूं प्राप्त कर लैंदी है, उसी वेले उसनूं ऐ यकीन आंदा है ऐ सृष्टि दे विच जड़ और चेतन दे विच ओ आवाज कम कर रही है, ताहंी जा करके जिस वेले ओ बाहर देखदी है इस चोले दे विच वापस आंदी है यानि के जदों अन्दर जांदी है, ऐ चोला उसदा ऐत्थे ही रहंदा है, जींदे - जी मरन दा मजमून है । ऐ सुरत जदों सिमटदी है अंतर दे विच छ्याल पक्का करदी है परमात्मा दी आवाज दे विच, ताहंी जा करके ऐ भेद पता चलदा है कि ओ त्रिकालदर्शी हो जांदी है ।

त्रिकालदर्शी दा भाव ऐ है कि जिस वेले ओ नजर मारदी है अन्दर जा करके, उसनूं निचले मण्डलां दे विच जो कुछ वी हो चुका है, जो हो रेहा है, और जो कुछ होंगा है उसनूं पता लग जांदा है और जिस वेले ऊपर नजर मारदी है ऊपर दे मण्डल जेड़े ओदे कोलों छुपे नहीं रहंदे, सारे भेद जेड़े ने उस जीवात्मा दे अगे प्रगट हो जादे ने और जिस वेले दुबारा उतर करके चोले दे विच वापस आंदी है, उसी वेले उसदी ओ दीवानी हालत हो जांदी है यानि के ओ सच नूं देख लैंदी है कि हर जगह हर कोने दे विच की है । ऐ परमात्मा दा बणाया होया इक बाग है उस बाग नूं और उसे तरीके दे नाल फायदा चुकदी

है, खुशबू लैंटी है उसनूं देख - 2 के प्रसन्न होंदी है । “पेख-
पेख नानक बिगसाई ।” दा ऐ ही भाव है, गुरु नानक साहब
उसनूं देख - 2 के प्रसन्न नहीं हो रहे, ऐ तुकां ऐ चौपदां जो है
गुरु अर्जुन देव पातशाह ने उच्चारिया है उन्हानूं कोई सपना
नहीं सी आया कि गुरु नानक साहब इन्हाँ तुकां नूं इस करके
उच्चार रहे सन कि जगत नूं देख - 2 के प्रसन्न हो रहे ने । ऐ
भाव इन्हाँ दा उस जीवात्मा वास्ते उच्चारया गया सी कि
जिन्हाने अंतर दे विच ओ अवस्था नूं प्राप्त करके जिस वेले
जगत दे विच वापस आंदिया ने, ते ओ जगत उन्हानूं उस
परमात्मा दा बाग सरूप नजर आंदा है और जिस तरह असी
बाग दे विच जादे हाँ सैर करन वास्ते, फूला नूं देखदे हाँ, उन्हाँ
दी खुशबू नूं लैदे हाँ, आपणे अन्दर दी हवा गंदी कड के और
उस शुद्ध हवा नूं लै करके आपणे शरीर नूं स्वस्थ बणादे हाँ ।
उसे तरीके दे नाल ओ जीवात्मा उस परमपद नूं प्राप्त कर चुकी
होंदी है ओ इस बाग दे विच भ्रमण करदी है और इसदा लाभ
चुकदी है पेख - पेख करके यानि देख - देख कर प्रसन्न होंदी
है । क्यों प्रसन्न होंदी है ! क्योंकि उसनूं हर निचला या उत्तला,
जड़ या चेतन दे विच ओ इक समाया होया नजर आंदा है ।
यानि के बड़ा उच्चा रुहानी भाव है जेड़ी किसी विरली जीवात्मा

ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਂਦਾ ਹੈ ਜੇਡੀ ਅੰਤਰ ਦੇ ਵਿਚ ਉਥ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਚੁਕੀ ਹੋਂਦੀ ਹੈ । ਉਸਦੇ ਬਾਦ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਬ ਦੀ ਜੇਡੀ ਬਾਣੀ ਹੈ ਓਦੇ ਵਿਚ ਵੀ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬਾਂ ਨੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਭਾਵਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ਵਟ ਕੀਤਾ ਹੈ “ਸਤਿਗੁਰ ਕੌਤ ਬਲਿ ਜਾਈਏ । ਜਿਤ ਮਿਲਿਐ ਪਰਮਗਤਿ ਪਾਈਏ ।”

ਸਤਿਗੁਰ ਤੇ ਬਲਿਹਾਰ ਜਾਣਾ ਸਤਿਗੁਰ ਨੂੰ ਮਿਲਣਾ । ਮਿਲਣਾ ਜੋ ਸ਼ਬਦ ਹੈ ਏ ਪ੍ਰੈਕਿਟਕਲ ਦੀ ਤਰਫ ਝਸ਼ਾਰਾ ਹੈ, ਅਖੀ ਸਤਿਗੁਰ ਕੋਲ ਚਲੇ ਗਿਆ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਉਪਦੇਸ਼ਾਂ ਨੂੰ ਸੁਣ ਲੇਅਾ, ਇਕ ਕਨੌਂ ਸੁਣਧਾ, ਇਕ ਕਨੌਂ ਕਡ ਦਿਤਾ, ਉਸਦਾ ਕੋਈ ਵੀ ਲਾਭ ਨਹੀਂ । ਜੇਡੇ ਦਰਸ਼ਨ ਦੇ ਜੋ ਲਾਭ ਮਿਲਨੇ ਨੇ, ਓ ਤੇ ਇਤਨੇ ਨੇ, ਕਿ ਅਖੀ ਬਧਾਨ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ, ਪਰ ਓ ਸਾਰੇ ਇਤਨੇ ਜਧਾ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਵੀ ਸਾਡੇ ਕਰਮ ਇਤਨੇ ਭਧਾਨਕ ਔਰ ਇਤਨੇ ਘਣੇ ਇਕਟ੍ਰੋ ਕਿਤੇ ਹੋਯੇ ਨੇ, ਅਰਥਾਂ ਖਰਬਾਂ ਹੀ, ਕਿ ਕਈ ਕਰੋੜ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ੍ਛੋਂ ਕਡ ਵੀ ਦਿਤੇ ਜਾਣ ਸਾਥ - ਸ਼ਾਂਤ ਜੀ, ਤੇ ਅਖੀ ਇਕ ਪੌਢੀ ਵੀ ਨਹੀਂ ਚਢ ਸਕਦੇ । ਇਨ੍ਹਾਂ ਭਾਵਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝ੍ਹੀ, ਸਤ ਦੇ ਵਿਚ ਕਮੀ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਨ ਸਾਂਗ ਵਿਚ ਕਮੀ ਹੈ । ਕਮੀ ਹੈ ਤੇ ਮਨ ਦੇ ਹੁਕਮ ਵਿਚ ਜੀਵਾਤਮਾ ਦਾ ਪਲ - ਪਲ ਰਮਣ ਕਰਨਾ, ਜਦ ਤਕਣ ਏਦੇ ਵਿਚ੍ਛੋਂ ਨਹੀਂ ਨਿਕਲੇਗੀ, ਤਦ ਤਕਣ ਉਸ ਸਚ ਨੂੰ ਹਾਸਿਲ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੀ । ਓ ਪਰਮਗਤਿ ਕੀ ਹੈ, ਪਰਮਪਦ ਦਾ ਹੀ ਜੋ ਦੂਜਾ ਭਾਵ ਹੈ ਪਰਮਗਤਿ । ਅਨੰਦਰ ਦੀ ਤਰਫ ਝਸ਼ਾਰਾ ਕਰਦੇ ਨੇ ਕਿ ਓ ਜੀਵਾਤਮਾ ਬਲਿਹਾਰ ਜਾਦਿਆਂ ਨੇ, ਕੇਡਿਆਂ ਜੀਵਾਤਮਾ

बलिहार जादियां ने ! असी किस तरह बलिहार जादे हाँ, सतिगुरु बड़े स्पष्ट उपदेश कर रहे हन, के कोई की करदा है, किसी नूं पता लगा कि सतिगुरु दिल्ली दे विच आ रहे हन, ऐने वजे उन्हाँ दी गड्ढी ने आणा है, और की करदे ने, ओ सङ्काँ ते लेट जादे ने । कई की करदे ने उन्हाँ दी काराँ अगे लेटदे ने, कई उन्हाँ दे चोले खिचदे ने, उन्हाँ दे होर जेडे संसारिक कम हन, जेडे ओ करन वास्ते निबटाण वास्ते आंदे ने, उन्हाँ दे रस्तेयाँ विच रुकावटाँ पादे ने । ऐ की है? ऐ बलिहार जा रही है जीवात्मा । साध - संगत जी करमानुसार बुद्धि मिली है और ओदे अनुसार वृति बणी है और जैसी सोझी इन्हाँ करमानुसार सतिगुरु ने बक्शी है, ओदे अनुसार ही ऐ जीवात्मा बलिहार जा रही है । पर इस तुक दे विच ऐ बलिहार जाणा उस जीवात्मा दी तरफ नहीं है, ऐत्थे उस जीवात्मा दा बलिहार जाणा गुरु साहब उपदेश करदे ने, जिन्हाँने उस परमगत नूं प्राप्त कीता है । हुण परमगति केड़ी है ! जिस वेले जीवात्मा, मिलिए दा भाव प्रैक्टिकल की है, जिस वेले जीवात्मा बहुत समय तक पूर्ण सतिगुरा दा संग करदी है ना और उन्हाँ दे उपदेशा दे अनुसार आपणी जिन्दगी नूं प्रैक्टिकल जामा पहना देंदी है ना, उस वेले सतिगुरु अंतर दे विच प्रगट हो करके शब्द

रूप दे विच उसनूँ ओ आवाज सुणादे ने, शब्द सुणादे ने, ओ
नाम सुणादे ने जिसदे अन्दर प्रकाश होंदा है और जिस बेले
ओ उसदे विच रमदी है ना जीवात्मा, उस बेले जीवात्मा चढ़ाई
नहीं कर सकदी, उसदे विच प्रीत दी कमी होंदी है पर ज्यों -
2 ओदे विच प्रीत बदांदी है न, ते सतिगुरु उसनूँ अन्दर दे विच
चलणा सिखादे ने, जिस तरह इक बच्चा जमदा है, माता -
पिता उसदा हथ पकड़ के, उंगुली पकड़ के उसनूँ चलणा
सिखादे ने ना, ठीक इसे तरीके दे नाल अन्दर दा सत्संग है
जेडा कि सच्चा सत्संग होंदा है, जेदे विच सतिगुरु आप इस
जीवात्मा नूँ बिल्कुल इक ठीक तरीके दे नाल उंगुली पकड़ के
अन्दर दे विच चढ़ाई करनी सिखादे ने और जिस बेले ओ
बच्चा चलदा होया जवान हो जांदा है ना, ओ जीवात्मा चलण
लग पैंदी है, ओ परमगत नूँ प्राप्त करदी है । उस परमगती नूँ
प्राप्त करन दे बाद हीं जीवात्मा सचखण्ड पहुँच सकदी है ।
सचखण्ड उस सत्पुरुष दी गोद विच पहुँच करके उसनूँ ओ
परमपद दी प्राप्ति होंदी है । परमपद ताहीं प्राप्त होंदा है जदों
जीवात्मा अन्तर दे विच परमपद नूँ प्राप्त कर लैंदी है और
परमपद दी प्राप्ति सिर्फ और सिर्फ सतिगुरु दा मिलन यानि
के उसदे उपदेशानुसार प्रैक्टिकल रूप दे विच यानि के इक

काले भाण्डे नूं असी उंगुल न लगाइये उंगुल काली नहीं हो
सकदी, उसे तरीके दे नाल अगर सतिगुरु दे संग दे विच उन्हाँ
दे उपदेशाँ दे ऊपर अगर असी अज तक अमल नहीं कीता, ते
याद रखणा अज तक असी बाहर दा सत्संग नहीं कीता । अगर
बाहर दा सत्संग पूरा नहीं होया, ते अन्दर दा कदों और केड़े
युग विच शुरू करागे ! पूरे होंण दे विच ते जेझा टाईम लगणा
है सतिगुरु अन्दर दी क्लास लैंदे ने, ओत्थे जा करके ही स्पष्ट
होयेगा कि कितना प्यार सानूं आपणे सतिगुरु नाल है, कितना
प्यार सत्पुरुष दी उस आवाज दे नाल है, कितना प्यार उस
प्रकाश दे नाल है कि असी उसदे विच लीन हो करके सत नूं
प्राप्त कर सकदे हाँ । तो इस छोटी जई तुक विच इतने गहरे
भाव छुपे ने, ते ओ ही जीवात्मा बलिहार जांदी है, किस तरह
बलिहार जांदी है ? कि जिस वेले ओ दुबारा इस चोले विच
वापस आंदी है ना, उस वेले इस जगत दे विच हर पल, हर
घड़ी आपणे सारे कम करदी है, सतिगुरु कदी वी उपदेश नहीं
करदे कि आपणी जिम्मेदारियाँ तों दूर नठठो (दौड़ो) । असी
ओ सारे ही कम करने ने, पर किस तरीके दे नाल करने ने !
आपणे इस ख्याल जो आत्मा दी ताकत है ना, उसनूं आपणे
सतिगुरु दे बचनाँ विच शब्द रूप विच लगाणा है, उस प्रकाश

दे विच लगाणा है जो दिन - रात सानूं अन्दर धुनकारे दे रेहा है, लैंण वास्ते आया है पर सानूं अज तक ओरी आवाज सुणाई नहीं दिती । असी कन दे विच अंगूठा देंदे हां, ऐ अंगूठा देंणा है जगत दी तरफों, जद तकण जगत दीआं आवाजां साडे अन्दर बंद नहीं होंणगीआं, बच्ये दीआं किलकारियां बंद नहीं होंण गीआं, ममता दा जो मोह है उसदी तरफ अंगूठा नहीं दवागे, ऐ जगत दी प्रीत दी तरफ अंगूठा नहीं दवागे तद तकण अन्दर दी ओ परमात्मा दी कशिष, प्रकाश, ओ आवाज सानूं चाह करके वी प्राप्त नहीं हो सकदी । अगर असी सचमुच चाहंदे हां, ते सानूं बाहरों निकलना पयेगा प्रैक्टिकल रूप दे विच, मिलना पयेगा प्रैक्टिकल रूप दे विच सतिगुरु दे उन्हां बचनां दे ऊपर ताहीं जा करके जीवात्मा अन्दर दे उस मुकाम नूं प्राप्त करके दिन - रात हर पल, हर घड़ी बलिहार जांदी है आपणे सतिगुरु दे ऊपर । क्यों ! क्योंकि उसी दी वजह दे नाल उसने बाहर और अन्दर उस इक सच नूं प्राप्त कीता है । अगे होर स्पष्ट करदे ने “सुर नर मुनि जन लोचदे सो सतिगुरु दिआ बुद्धाई जीउ ।” सो शब्द क्यों लगाया है ? सत्पुरुष नूं तरस आ गया, सो इस करके लगाया है । सतिगुरु नूं इसी करके भेजया गया है सत्पुरुष ने तरस खादा है, किनां ऊपर

तरस खादा है ? असी नजर मार करके देखिये क्या देवते,
क्या राक्षस, क्या मनुख । क्या मनुखां दे विच उत्तम जून नहीं
है ! कितनियां ही ने रिछियां - सिछियां हासिल कीतियां । कई
तरीके दे कर्मकाण्ड करके और कितने ने जेझे राक्षस ने उन्हाने
कितने ही तरीके दे तप करके हुण रावण नूँ असी राक्षस ही ते
कहंदे हां, कितना तप उसने कीता, कितनी बारी आपणा सिर
कट के आपणे गुरु नूँ दिता, तद जा करके उसनूँ ऐ समर्था
हासिल होई । कितना सब करन दे बाद वी ओ परमात्मा दी
प्राप्ति नहीं होंदी, जदों कि तुलसीदास जी ने बाणी विच स्पष्ट
कीता है “जपह जाइ संकर सतनामा ।” जदों असी शंकर दी
पूजा करके उस भगवान दे कोल पहुँचदे हां, उसी दा रूप हो
जादे हां, ते असी जा करके की देखदे हां, कि शंकर जी वी
आपणी अख बंद कीते और धुनी रमाये बैठे ने और उसी इक
नूँ प्राप्त करन वास्ते उसी नूँ जप रहे ने, सतिनाम नूँ जप रहे
ने । सतिनाम लफज किसी Sikhism नाल या किसी धर्म
नाल संबंध नहीं रखदा, सत दा भाव है सच । यानि सच ने
रहणा है कि सब ने खत्म होजाणा है ते किसी ने पुछया, “उसदा
की नाम है जिसनूँ तुसी सच कहंदे हो ? ” ते संतां ने उपदेश
कर दिता, उसदा नाम सतिनाम है, तो सतिनाम दा सिर्फ इतना

ही भाव है । सत्पुरुष नूं असी सतिनाम कह करके पुकारदे हां, किसी धर्म दे नाल इसदा कोई संबंध नहीं है । शंकर जो जदों उस धुन दे विच बैठे ने, विचार करके देख लो कि असी किसनूं प्राप्त करना है ! किसदी पूजा करनी है ! कित्थे जा करके असी उस अटल या निश्चल चीज नूं प्राप्त करके सदा लई आवागमन तों मुक्त हो सकदे हां ! ते जदों हजारां साल तप करके उस वस्तु दी प्राप्ति नहीं होई, उस वेले सत्पुरुष ने तरस खादा इन्हां जीवात्मा दे ऊपर, सो उन्हाने सतिगुरु नूं अवतार दे करके सारी समर्था दे करके इस सृष्टि नूं शीतलता प्रदान करन वास्ते इस जगत विच भेजया, उसदे नाल ही सतिगुरु स्पष्ट करदे ने, इस जगत विच बहुत सारे योगेश्वर ने, बहुत सारे धर्मात्मा ने, बहुत सारे भले मनुख और संत ने । बहुत सारे डॉक्टर और वैद्य ने, उन्हां दा कम की है कि जो वी जीवात्मा तड़फ रही है, उसनूं कोई दुख है, कोई रोग है तो उसदा इलाज दसणा, उसदा रस्ता दसणा । पर सत्संग विच जदों सतिगुरु आंदे ने, ओ एक ऐसे वैद्य ने, कि ओ सिर्फ साध - संगत जी इलाज नहीं करदे, ओ दुख नूं ही लै लैदे ने, आपणे ऊपर लै लैदे ने । गुरु हरकिशन महाराज दी तरफ देखो, उन्हाने चोला क्यों छड़या ? पंज साल दी अवस्था विच बैठे सन, दो साल ही नहीं सी होये जदों उन्हाने

दिल्ली दे विच महामारी दे रूप विच हैजा फैलया होया सी और
सारीयां बीमारियां आपणे जिस्म दे ऊपर लै लितियां और
आपणा चोला छड दिता । क्या उन्हां दे कोई आपणे करम
सन ? क्या सतिगुरु करमां दे विच होंदे ने ? अगर सतिगुरु
करमां दे अधीन है, ते इस जगत दे विच कोई वी ऐसा नहीं है
जो इस करमां तों बाहर निकल सके । सो ऐ विचार करन दा
मजमून है कि जद तकण अस्थी उस सत नूं प्राप्त नहीं कर
लैंदे, साडा उद्धार नहीं हो सकदा । ते उसदा जरिया सिर्फ -
सिर्फ इको ही है, सत दा संग, पर ओ सत्संग विच सिर्फ जाणा
ही नही, कि प्रैक्टिकल तौर ते उसनूं अमली जामा वी पहनाणा
है । तां सत्पुरुष जो मेहर करदे ने, समर्था बक्षादे ने, उसदा ऐ
भाव है इस तुक दे विच । सतिगुरां नूं भेजदे ने सारी समर्था दे
करके, उन्हां तङ्गफटी जीवात्मा नूं तुसी वापस लै करके आओ
। “सत्संगत कैसी जाणिए जिथे एको नाम वखाणीए । एको
नाम हुकम है नानक सतिगुर दीआ बुझाई जीउ ।” ऐ गुरु
नानक साहब ने स्पष्ट कीता है कि ऐ सत्संग की है, सत्संग
ओ है जिथे सतिगुरु प्रगट होंदे ने, ओथे ओ नाम यानि के
ओ नाम की है ! ओ शब्द की है ! ओ कीर्तन की है ! ओ इक
आवाज है, मिठठी आवाज इक प्रकाश, उसदे गुण गादे ने,

उसनूं मिलण दा रस्ता दस्ते ने, ऐदी विधि दस्ते ने । हुण ऐदा
ऐ भाव नहीं है कि ओ सिर्फ उस आवाज दी गल करदे ने, ओ
जद इस जगत दे विच आंदे ने, मन ने सानूं इस जगत विच
बंधण लई कई तरीके दे भ्रम फैलाए ने, ओ आपणे संग दे विच
बहुत सारे भ्रम जेडे वी इस मन ने इस जीवात्मा नूं भ्रमां करके
रखे ने ओत्ये बंधण वास्ते, सारे भ्रमां नूं दूर करदे ने यानि के
स्पष्ट है ओत्ये सिर्फ नाम, परमात्मा दी आवाज दे मुतलक ही
उपदेश नहीं होंदा, ओदे नाल ही सारे भ्रम वी दूर कीते जादे ने
। जद तकण ऐ जीवात्मा नूं इन्हां भ्रमां विच्छों नहीं कडया
जायेगा तद तकण ऐ जीवात्मा चाह करके वी सतिगुरु दे
उपदेश ऊपर अमल नहीं कर सकदी । क्यों ! क्योंकि बाहरी
रूप ते उन्हां दा देह है और देह इसने वी हासिल कीती होई है,
ते इक देह, देह दे हुकम विच क्यों आवे ? ऐ मन दा बहुत
वट्ठा भ्रम फैलाया होया है । जो अंदर दी समर्था है उसनूं कोई
विरला ही जाण सकदा है, जिस तरह असी हिसाब दे मजमून
दे विच किसी समस्या नूं हल करना चाहंदे हां, ते असी कुछ
नतीजे पहले ही निशान लगा देंदे हां यानि कि “X” और “Y”
दा की अनुमान है पहले ही मौखिक रूप विच ओदे विच
तकसीम करदे हां, उसदे बाद ही जो नतीजा निकलदा है ओ

सच्चा होंदा है। यानि के मौखिक रूप दे विच सानूं पहले यकीन करना पैंदा है। उसे तरीके दे नाल जदों असी सत्संग दे विच जादे हां, सतिगुरु दे उपदेश नूं सुणदे हां, ते इस जीवात्मा नूं कुछ समय लई जरूरी है कि यकीन करना पैंदा है, जिसनूं असी blind faith कहंदे हां। जद तक ऐ blind faith नहीं कीता जायेगा, जीवात्मा मेहनत नहीं कर सकदी। हुण अगर सतिगुरा ने उपदेश दिता है सत्संग विच, कि तुसी आपणी अमली जिन्दगी विच सच्चा होंणा है, सच बोलना है, ते इसनूं आजमा करके देखो, उसनूं मौखिक रूप विच मन लो कि सतिगुरु परमात्मा है और परमात्मा ने जो वचन कीते ने और ओ सच ने, ओ सच्चे नूं अगर असी 40 दिन, महीना, दो-महीने जितना वी असी चाहिए असी उसनूं आजमा करके देख सकदे हां और जदों असी उसनूं आजमा लवागे, ते उसदे नतीजे दा कुछ न कुछ अभाव अंतर दे विच जरूर हो जायेगा। विचार करके देख लो, अगर असी सच दी लड़ाई घर जा करके अज लड़नी शुरू कर देईये, ते 40 दिन बाद ओदा नतीजा देखिये, ते इस जगत तों बहुत सारी प्रीत जेडी कि छूठी है, साडे तों दूर हो जायेगी, असी उस सच तरफ जो आणा शुरू कर दवागे। ऐ तद ही होयेगा जदों असी अनुमानिक तौर ते कुछ यकीन

उस परमात्मा दे ऊपर करागे, जिसनूं असी सच दे रूप दे विच,
सतिगुरु दे रूप दे विच इस जगत दे विच देखदे हां । भाव ऐ
है, कि ओ बाहर ढी देह दे विच यकीन नहीं करना, ओ इक
भ्रम लै करके जीवात्मा आंदी है । अगली तुक दे विच सतिगुरु
होर स्पष्ट करदे ने, जित्थे इक नाम दा ही होका दिता जांदा
है.....क्रमधः